International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 858-859

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 858-859
www.allresearchjournal.com
Received: 09-11-2015
Accepted: 12-12-2015

डॉ० रामपाल
संस्कृत विभाग, के0 ए0 (पी0 जी0) कॉलेज, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ० रामपाल
संस्कृत विभाग, के0 ए0 (पी0 जी0) कॉलेज, कासगंज, उत्तर प्रदेश, भारत

अविमारकम् में प्रयुक्त कृत्य प्रत्ययान्तों का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ० रामपाल

सारांश
कृत्य प्रत्ययों (तव्य, अनीयर, क्यप्, ण्यत्, यत्, केलिमर्) का समीक्षात्मक अध्ययन कर कृत्यप्रत्ययान्त शब्दों के अर्थों को स्पष्ट किया है। यथा भास प्रयुक्त 'ज्ञेयम्' शब्द ज्ञा धातु से यत् प्रत्यय होने पर सिद्ध हुआ है जिसका अर्थ 'जानने योग्य' है तथा 'स्वामिभाग्येषु' यहाँ भज् धातु से ण्यत् का विधान है जो कि पाणिनि सम्मत ही है। जिसका अर्थ 'भाग्य प्रबल है' ऐसा किया है। इसी प्रकार अन्य कृत्य प्रत्ययान्त शब्दों का अर्थमूलक विश्लेषण किया है।

भास ने अविमारकम् में कृत्य प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग पाणिनि के नियमानुसार ही किया है, तथा पाणिनि ने जिन प्रत्ययों का निर्देश किया है, वे क्रमानुसार इस प्रकार है–

तव्यत्, तव्य, अनीयर् (केलिमर्) यत्, क्यप्, ण्यत् ये प्रत्यय विविध सूत्रों द्वारा कृत्य के अधिकार में कहे गये हैं। इनमें से तव्यत् का अन्त्य तकार तथा अनीयर् का अन्त्य रेफ इत्संज्ञक होकर लुप्त हो जाते हैं। तथा तव्य और अनीय ही शेष रहता है, इसके रूपों में कोई अन्तर नहीं पड़ता केवल इनकी स्वर [1] व्यवस्था में ही अन्तर पड़ता है।

भास ने भी अविमारकम् में उपर्युक्त प्रत्ययों को चाहिए अर्थ में प्रयुक्त किया है। पाणिनि ने इन्हीं प्रत्ययों के लिए तव्यात्तव्यनीयरः [2] सूत्र पढ़ा है।

अविमारकम् में भास ने जिन शब्दों को प्रयोग किया है, उनको वाच्य सहित प्रस्तुत ाकिया जा रहा है, जो इस तरह हैं–

भूतिकः – किमत्र परीक्षितव्यम् [3]
परि + ईक्ष् + तव्यम्

भास ने प्रस्तुत शब्द को कर्मवाच्य में प्रयुक्त किया है जिसका अर्थ है, परीक्षा करनी चाहिए।

राजा – कौञ्जायन! किमिदानीं काशिराजदूतं प्रति कर्त्तव्यम् [4]
'कृ + तव्य'

यहाँ भी कृ धातु से तव्य का प्रयोग चाहिए अर्थ में किया है। जो कि कर्म वाच्य में प्रयुक्त है।

भूतिकः – इदानीं तु न प्रत्याख्यातव्यम्।
प्रति + आङ् + ख्यै + तव्य

भास ने भी उपर्युक्त शब्द की कर्मवाच्य में प्रयुक्त किया है जिसका अर्थ प्रत्याख्यान माना है।

मण्डलं प्रेक्षितव्यं [5] (प्रेक्षितव्या) (अवेक्षितव्यः)

भास ने भलीभाँति देखने के अर्थ में भिन्न–भिन्न उपसर्गों से ईक्ष् धातु का प्रयोग कर्म वाच्य में किया है।

अये शब्द इव! वहुभिः कारणैर्भवितव्यम् [6]
भू + इट + तव्य

भास ने भू धातु से तव्य प्रत्यय का विधान कर्मवाच्य में होने अर्थ के लिए किया है।

इह तु न स्थातव्यम् [7]

भास ने स्था धातु से तव्य का विधान बैठना चाहिए अर्थ में किया है। जबकि पाणिनि ने [8] सामान्य रूप में तिष्ठादेश किया है।

अनीयर्

अनीयर् में र् स्वरार्थ के लिए जोड़ा गया है। तथा इसका प्रयोग भी चाहिए अर्थ में तथा योग्य अर्थ में होता है, भास ने भी अविमारकम् में इन्हीं अर्थों में अपने प्रयोग किये हैं जिसका विवेचन इस तरह है––

कन्या पितुहिं सततं बहुचिन्तनीयम्। [9]

चित्ति धातु से अनीयर् प्रयोग चिन्ता योग्य अर्थ में ही मिलता है।
अस्ति में तत्र स्त्रीकरणीय [10] नियमकार्यम्।

यहाँ भी अनीयर् का विधान योग्य अर्थ में ही मिलता है।
कन्या पितृत्वं वहुवन्दनीयम्।

भास ने प्रशंसनीय अर्थ में ही इसका प्रयोग किया है जो कि कर्मवाच्य में प्रयुक्त है।
अथ कश्चिद् दर्शनीय [11] .....द्विपवरम्।
इसका प्रयोग भी देखने के योग्य अर्थ में ही मिलता है।
अतस्त्वशञ्जनीयेयं [12] भूमिः।

भास ने अशञ्जनीया भूमि का प्रयोग न प्रवेश योग्य भूमि या स्थान के लिए ही किया है।
भूतिकः – न भृत्य दृषणीया [13] राजानः स्वामित्रा..... अमात्यानाम्

भास ने दूष् धातु से अनीयर् का प्रयोग निन्दा योग्य अर्थ में किया है।

यत् प्रत्ययान्त

भास ने अविमारकम् में यत् प्रत्ययान्त कई शब्दों का प्रयोग किया है। जो कि पाणिनि के अनुसार ही है, पाणिनि ने तृतीय अध्याय में अचो यत् [14] सूत्र दिया है।
यत् प्रत्ययान्त शब्द भी भाव एवं कर्म में ही होते हैं, जो कि नपुंसक लिङ्ग में होते हैं––
भास द्वारा पठित यत् प्रत्ययान्त शब्द इस तरह हैं––
मेघान्तर्गत रविवत् प्रभानुमेयः। [15]
अनु + माङ् + यत्

भास ने इसका प्रयोग 'सूर्य के समान प्रभा द्वारा ज्ञातव्य' अर्थ के लिए किया है।
ज्ञेयं लोकानुवृत्तम्
ज्ञा + यत्

भास ने इसका प्रयोग कर्मवाच्य ने किया है। जिसका अर्थ है जानना चाहिए।
न शक्यं [16] मनो जेतुम्।
शक् + यत्

भास ने शक्यम् शब्द मन का विशेषण मानकर भाववाच्य में इसका प्रयोग किया है जिसका अर्थ है 'जीतने योग्य' जिसका पाणिनि ने सूत्र दिया है–
शकिसहोश्च। [17]
नयनपात्रपेयं वपुः
पा + यत्

भास ने पेयम् शब्द को कर्मवाच्य में माना है जिसका अर्थ नयनों से भली भाँति पान करना।
गम्या [18] स्तु देशाः सुपरीक्षिता में।
गम् + यत्

भास ने 'जाने योग्य' अर्थ के लिए इसका प्रयोग किया है जो कि कर्म वाच्य में है।

ण्यत् प्रत्ययान्त

भास एक नाटककार ही नहीं अपितु उच्चकोटि के भाषाविद् भी है, उनके द्वारा अविमारकम् में प्रयुक्त ण्यत् प्रत्ययान्त शब्द निम्नलिखित हैं–
"कथं कुशलिनी भवति विद्यमानेषु स्वाभिभाग्येषु" [19]

भास ने भज् धातु से ण्यत् प्रत्यय का प्रयोग भाग्य के लिए किया है जो कि भाववाच्य में प्रयुक्त है।
रक्ष्यः [20] यत्नादिहात्या..... नावेक्षितव्यः।

भास ने रक्ष् धातु में ण्यत का प्रयोग रक्षणीय अर्थ में किया है जो कि भाववाच्य में प्रयुक्त है।
अस्ति में तत्र स्त्रीकरणीयं नियमकार्यम् [21]
कृ + ण्यत्

भास ने कृ धातु से ण्यत् का प्रयोग करने योग्य कार्य के लिए प्रयुक्त किया है जोकि भाव वाच्य में है।

क्यप् प्रत्ययान्त

अविमारकम् में भास ने क्यप् प्रत्ययान्त थोड़े शब्दों को ही पढ़ा है। जो कि पाणिनि के अनुकूल ही हैं, आचार्य पाणिनि ने पाँच धातुओं से क्यप् का विधान किया है। [22]
शिष्यः [23] शास् + क्यप्

भास ने शासन करने योग्य अर्थ में इसका प्रयोग किया है।

संदर्भ

1. अ0 6.1.179।
2. अ0 3.1.96।
3. अवि0 गद्य अञ्।
4. अवि0 गद्य अञ् 19।
5. अवि0 गद्य अञ्, पृ0 22।
6. अवि0 1, पृ0 7।
7. अवि0 3, अञ्, पृ0 75।
8. पाघ्राध्मा.....
9. अवि0 1, श्लोक 2।
10. अवि0 1, पृ0 3।
11. अवि0 1, श्लोक 9।
12. अवि0 1, गद्य 15।
13. अवि0 1, गद्य 21।
14. अष्टाध्यायी 3.1.97।
15. अवि0 अञ्, 1, श्लोक 8।
16. अवि0 1.1.2।
17. अष्टाध्यायी 3.1.99।
18. अवि0 अंक 6, श्लोक 10।
19. अवि0 अंक 6, श्लोक 10।
20. अवि0 अंक 1, श्लोक 12।
21. अवि0 अंक 1, पृ0 3।
22. अष्टा; एतिस्तुशासवृदृजुषः क्यप् 3.1.99।
23. अवि0 षष्ठोऽञ्, पृ0 150।